मध्यप्रदेश की लोककथाएं





मध्य प्रदेश की लोककथाएं

रमेश बक्षी : अचला शर्मा

राजपाल

मूल्य : पैंतीस रुपये (Rs. 35.00)

संस्करण : 2010 © राजपाल एण्ड सन्ज़
ISBN : 978-81-7028-331-7
MADHYA PRADESH KI LOK KATHAYEN (Stories)
by Ramesh Bakshi, Achala Sharma

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110 006

website : www.rajpalpublishing.com
e-mail : mail@rajpalpublishing.com

क्रम

कहानी जलकन्या और राजसुआ की

बुन्देलखण्ड के एक नगर में एक राजा ठाट-बाट से राज करता था। प्रजा सुखी तो राजा सुखी। उसी नगर में राजमहल के पास एक झुग्गी थी और उसमें जसौंदी नाम का एक सरंगिया रहता था। वह न बेर देखता न अबेर, जब देखो तब सारंगी उठाकर राग शुरू कर देता था। लेकिन सारंगी में मधुरता थी और राजा खुश थे कि रात को उसका संगीत चैन की नींद सुलाता है।

एक रात की बात है। राजा सोये कि उन्हें एक सपना दिखा–सामने बियाबान जंगल था, जंगल में एक तालाब था, तालाब के पास मंदिर था और मंदिर के बीच एक भंवरा था, भंवरे में सीढ़ियां उतरने पर एक कुआं था, कुएं के अंदर एक बाग़ था, बाग़ के पार महल था और महल में सोलह साल की एक लड़की सोलह सिंगार किए खड़ी थी। राजा उसे देखकर मुग्ध हो गए और उसकी तरफ कदम बढ़ाया ही था कि तभी सारंगी बज उठी और राजा की नींद टूट गई। राजा ने गुस्से से लाल होकर जसौंदी को बुला भेजा। सिपाही उसे पकड़ लाया।

राजा ने गरजकर कहा, ''मूर्ख, तेरे कारण मेरा सपना टूट

गया और मैं जलकन्या से मिल नहीं पाया। अब अगर तूने फिर सारंगी छेड़ी तो तेरी जान की ख़ैर नहीं है।"

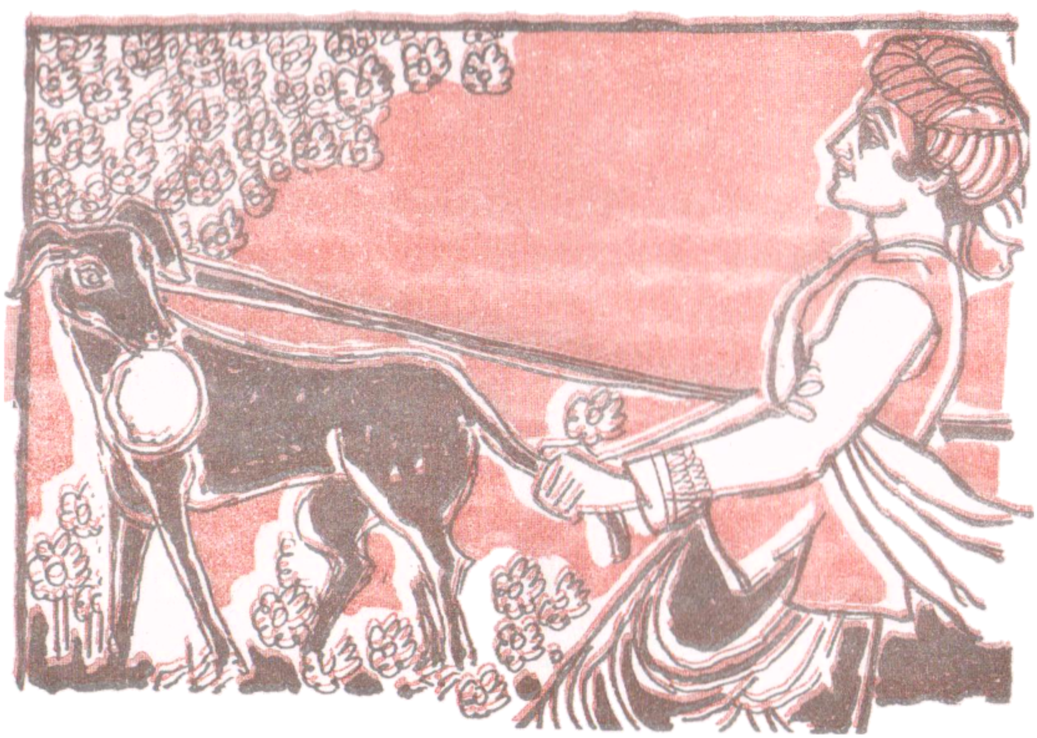
जसौंदी ने सिर झुका लिया और घर लौट आया। सारंगी उसने एक अंधेरे कोने में डाल दी। लेकिन गाने-बजानेवाले पर भगवान का बस भी नहीं चलता। एक रात बीती, दो रातें बीतीं और जसौंदी का हाथ अनजाने ही फिर सारंगी को छू गया। आवाज़ राजा तक पहुंची और राजा ने हुक्म फ़रमा दिया, "उसका सिर काट डालो और उसकी आंखें मुझे लाकर दो।"

जल्लाद जसौंदी को पकड़कर जंगल में ले गए। जब उसका सिर काटा जाने लगा तो जसौंदी ने कहा, "मुझे छोड़ दो। यह राजहठ है। कौन जाने कल राजा तुमसे मुझे फिर लाने को ही कह दें, फिर क्या करोगे ?"

जल्लादों ने बात समझी और एक बकरे की आंखें लाकर राजा को पेश कर दीं।

एक दिन फिर राजा को वही सपना दिखा—सामने बियाबान जंगल, जंगल में तालाब, तालाब के पास मंदिर, मंदिर के बीच भंवरा, भंवरे की सीढ़ियों के बाद कुआं, कुएं के अंदर बाग़ और बाग़ के पार महल, महल में सोलह साल की एक लड़की। इस बार सपने में राजा का लड़की से ब्याह भी हो गया। राजा की जब नींद टूटी तो वह यह सोचकर दुखी हो गया की फ़िज़ूल ही जसौंदी की हत्या करवा दी।

इधर जसौंदी दर-कूच-दर-मुकाम एक बियाबान जंगल में जा पहुंचा। वहां था एक तालाब। वह इस तालाब का वर्णन राजा से सुन चुका था। जसौंदी ने सोचा, हो न हो, यही सपने वाली जगह है। सुबह उसने क्या देखा कि एक सोलह साल की कन्या तालाब पर आई और मंदिर में पूजा करने चली गई।



उसने देहरी पर पूजा का आटा चढ़ा दिया। तभी एक कुत्ता आया और वह आटा खा गया। दूसरे दिन जब यही घटना घटी तो जसौंदी ने आटा समेट लिया और उसकी रोटियां बनाईं। रोटी पकाकर जब वह तालाब पर नहाने गया तो कुत्ता रोटी ले भागा। जसौंदी ने दौड़कर उसकी पूंछ पकड़ ली। कुत्ता दौड़ता गया और जसौंदी उसके साथ घिसटता चला गया। कुत्ते ने भंवरे को पार किया, कुएं में कूदा और बाग़ में जाकर उसी राजकुमारी के सामने खड़ा हो गया। राजकुमारी ने समझा, ईश्वर ने मेरे लिए वर भेजा है, सो उसने उसकी बड़ी आवभगत की। राजकुमारी ने यह जानने के लिए कि अतिथि गरीब है या अमीर, चांदी और पीतल के पात्रों में पानी भेजा। जसौंदी ने पीतल का पात्र ले लिया। राजकुमारी ने उसे ग़रीब समझकर विवाह का विचार छोड़ दिया।

रहते-रहते थककर जसौंदी ने एक दिन फिर कुत्ते की दुम पकड़ी और बाहर आ गया। नगर में लौटकर राजा को सारा किस्सा सुनाया कि वह उसे सपने वाली जगह दिखा सकता है। राजा ने उसे मुंहमांगा इनाम दिया और उसके साथ चला। उसी तरह राजकुमारी आई, उसने आटा बाहर रखा, जसौंदी ने रोटियां पकाईं और जैसे ही कुत्ता लेकर भागा, उसने उसकी पूंछ पकड़ ली तथा राजा से कहा कि मेरा हाथ पकड़ लो।

राजा और जसौंदी दोनों ही कुत्ते के साथ घिसटते-घिसटते राजकुमारी के सामने जा पहुंचे। राजकुमारी ने परीक्षा के लिए दो पात्रों में पानी भेजा तो राजा ने चांदी के पात्र से पानी पी लिया। राजकुमारी की शादी उस राजा के साथ धूमधाम के साथ हो गई। जसौंदी को मंत्री बना दिया गया।

एक दिन तीनों घूमने निकले। रास्ते में एक मरा हुआ सुआ पड़ा था। रानी ने कहा, "पहले इसे जिला दो तब आगे बढ़ूं।" राजा ने जसौंदी को घर भेजा कि संजीवनी मंत्र ले आए और हिदायत दी कि रास्ते में पुस्तक को खोलकर न देखे। लेकिन जसौंदी ने मन्त्र सीख लिया। जब राजा ने अपने प्राण देकर सुए को जिला दिया तो कपटपूर्वक सीखी हुई विद्या से जसौंदी ने अपने प्राण राजा के शरीर में डाल दिए और बोला, "अब घर चलें, रानी।"

रानी समझ गई कि असली राजा यह नहीं है। एक दिन रानी ने कह दिया, "मैंने तीन साल का व्रत किया है, उसके बाद ही हम राजा-रानी की तरह साथ रह सकेंगे।"

जसौंदी चुप लगा गया कि शीघ्रता करने से उसका काम बिगड़ जाएगा...। इधर रानी ने राज्य-भर में लोगों से कहा, 'जो जितने सुग्गे पकड़कर लाएगा उसे उतना ही इनाम मिलेगा।' एक दिन एक बहेलिये के जाल में राजसुआ फंस गया। उसने खुद ही कहा कि मुझे रानी के हाथ बेच दो।

जब राजसुआ रानी के हाथ लग गया तो वह उसे हिफ़ाज़त से रखने लगी। एक दिन एक बिल्ली ने एक सुग्गे की गरदन पकड़ ली। रानी बोली, "महाराज, इस मुरदे को ज़िन्दा करो, तभी भोजन करूंगी।"

जसौंदी ने अपने प्राण सुग्गे में डालकर उसे जिला दिया। तभी राजसुआ ने उस सुग्गे से प्राण निकालकर अपने-आप में डाल लिया। जसौंदी उसी क्षण मर गया।

बिछुड़े फिर मिल गए और सुख से रहने लगे।

कौन दिन अच्छे?

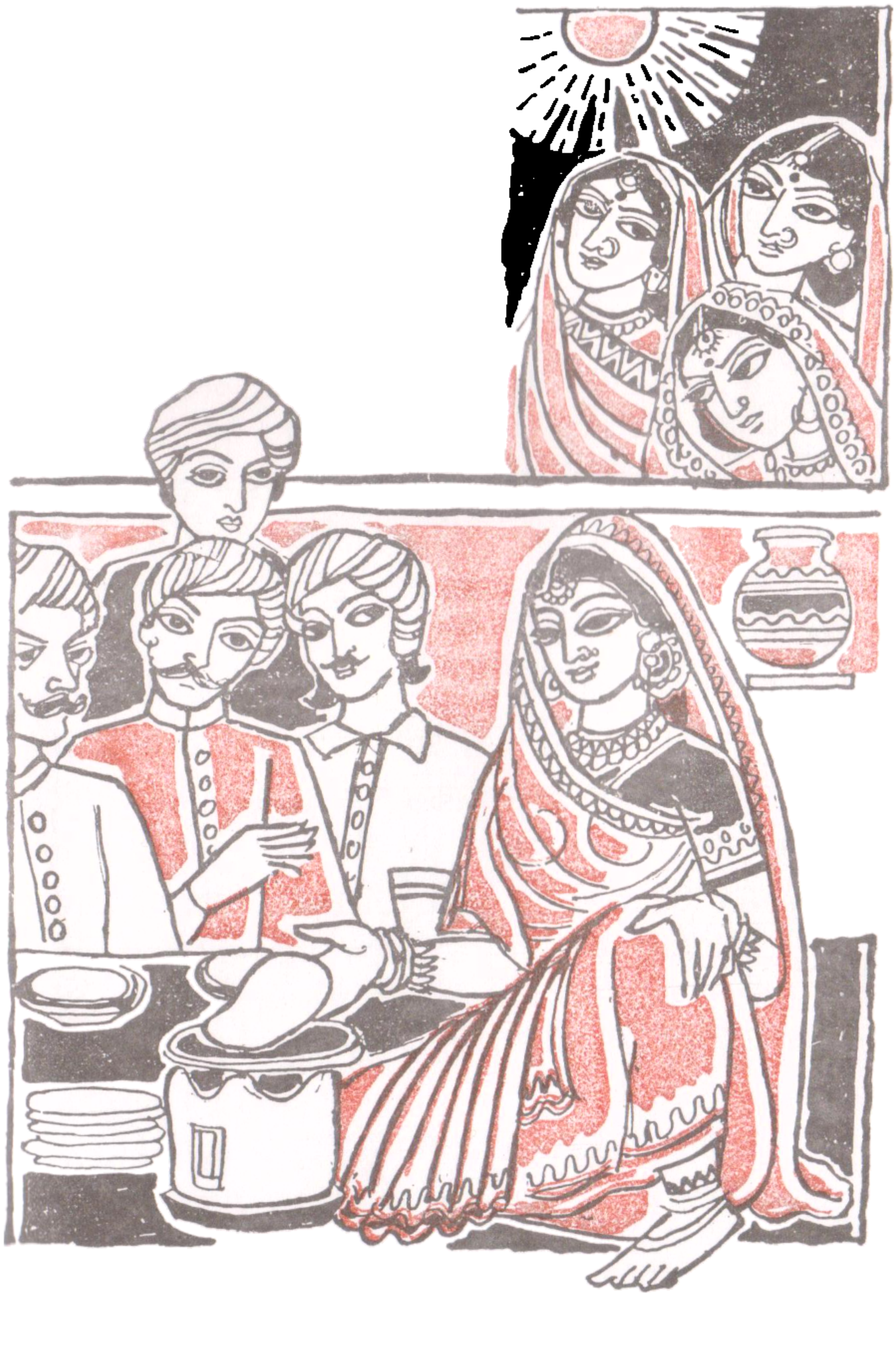
बुन्देलखण्ड के एक नगर में एक सेठ रहता था। खूब धन था उसके पास। कई हवेलियां थीं, और यों कहें कि उसकी पांचों उंगलियाँ घी में थीं। उसके चार बेटे थे, चारों रूपवान और समझ के भी पूरे।

जब बड़े बेटे का ब्याह हुआ तो नगरसेठ ने दूर-दराज़ की सोचकर बहू से एक सवाल पूछा, ‘‘यह बतलाओ बहू कि कौन-से दिन अच्छे होते हैं?’’

बहू ने उत्तर दिया, ‘‘ससुरजी, दिन गरमी के बेहद अच्छे होते हैं जब न सर्दी की परेशानी रहती है, न बरसात का कीचड़। दिन खस की टट्टी में कट जाता है और रात को बाहर सो सकते हैं।’’

नगरसेठ ‘ठीक’ कहकर चुप लगा गए, लेकिन जब दूसरे बेटे का ब्याह हुआ तो यही सवाल उसने नई बहू के सामने भी रखा। उसने जवाब दिया, ‘‘ससुरजी दिन तो बरसात के अच्छे होते हैं। हर तरफ हरा ही हरा रहता है और सावन में झूले डालकर झूलने का मज़ा भी रहता है। नदियों में बाढ़ का पानी देखकर मन प्रसन्न हो जाता है।’’

सेठ बात सुनकर चुप लगा गए, लेकिन जब तीसरे बेटे



का ब्याह हुआ तो उन्होंने अपना सवाल फिर तीसरी बहू के सामने रखा। तीसरी ने कहा, "ससुरजी दिन तो सरदी के भले। धूप में खूब कपड़े पहनकर घूम सकते हो और रात में गुदगुदे बिस्तर पर आराम से सो सकते हैं। सरदी के दिन सबसे अच्छे होते हैं।

नगरसेठ बात सुनकर फिर चुप लगा गए। कुछ दिनों बाद जब चौथा बेटा ब्याह करके बहू घर लाया तो सेठ ने वही सवाल चौथी बहू से पूछा। उस बहू ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, "ससुरजी, दिन वही अच्छे होते हैं जो सुख से बीतें।"

चौथी बहू का उत्तर सुनकर सेठ के चेहरे पर मुस्कान आ गई। वह खुश होकर बोले, "हां, यही उत्तर ठीक है।"

भगवान का राज, कभी धूप कभी छांव, सो आसमानी-सुलतानी के दिन आए। पता नहीं किस बात से राजा ख़ौफ़ खा गया और उसने हाकिम को हुक्म दिया, "नगरसेठ जिस किसी हालत में बैठा हो उसे सब बहू-बेटों सहित नगर से बाहर निकाल दिया जाए।"

हाकिम ने जाकर नगरसेठ को हुक्म सुनाया। सबको अपनी तलाशी देकर हाथ में बग़ैर कुछ लिए ही नगर से जाना था। सब जब बाहर निकल गए तो छोटी बहू सामने आई। उसके हाथ में हंडिया थी और सेर भर गुंथा हुआ आटा था। सिपाही ने उस हंडिया को छीनना चाहा तो उसने कहा, "मैं सबसे छोटी होने के कारण अब तक खाना नहीं खा पाई हूं, बाकी सब तो खा चुके हैं। या तो पहले मुझे खाना पकाकर खाने दो या फिर यह आटा साथ ले जाने दो।"

राजा की आज्ञा थी कि उन्हें एकदम नगर से निकाल दिया जाए सो सिपाही ने बहू को आटा ले जाने दिया।

इनका कारवां दर-कूच-दर-मुकाम आगे बढ़ने लगा। रास्ते में वे एक जगह सुस्ताने के लिए बैठे। उस समय धूप बहुत तेज़ थी और लू भी ज़ोर से चल रही थी। बड़ी बहू के मुंह से निकला, "हाय कितनी गरमी है, शरीर जला जा रहा है।"

सेठ ने बहू की बात सुन कहा, "तो क्या हुआ, ख़स की टट्टी क्यों नहीं लगा लेती कि आराम मिले।"

बहू खीझकर रह गई।

कुछ समय बीतने पर बादल घिर आए, हवा चली और पानी बरसने लगा। झड़ी ऐसी लगी कि सब लोग शरण के लिए भागे। दूसरी बहू बहुत ही परेशान थी सो सेठ ने धीमे-से कहा, "यह तो बरसात है, अब तो झूले बांधकर झूलने में मज़ा आ जाएगा।"

दूसरी बहू बहुत झेंपी।

रात हुई। पानी तो थम गया, लेकिन सरदी बढ़ गई। सब लोग कांपने लगे। तीसरी बहू को ठिठुरते देखकर सेठ ने कहा, "घबराती क्यों हो बहू, गुदगुदे बिस्तर पर जाकर क्यों नहीं सोती?"

वह बहू भी खीझकर रह गई।

तभी छोटी बहू ने कंडे जला लिए और आटे की रोटियां सेंककर सबको बांट दीं। वह आटे के भीतर एक लाल भी छिपा लाई थी सो अपने पति को देकर बोली, "पास के गांव में जाओ और इसे गिरवी रखकर जरूरत का सामान ले आओ।"

पति पास के गांव में गया, जरूरी सामान लाया और दूसरे

दिन वे एक ठीक जगह जाकर मंदिर में ठहर गए। सेठ ने अपना व्यापार फैलाया। एक जगह खोजी गई और कोठी बना ली गई। कुछ ही दिन बीते कि वहां का नगरसेठ नए नगर का भी बड़ा सेठ बन गया। राजा को जब इसका पता चला तो इनकी कोठी के पास चक्कर लगाने आया। उसने वहां कान लगाकर सुना तो सेठ का लड़का बोल रहा था, "मेरे लिए पान लेकर आओ।"

बहू ने उत्तर दिया, "इतनी रात को पान खाने की क्या तुक है? चूना नहीं है।"

"तो क्या हुआ! मेरे कान की बाली में पक्का मोती है इसे जलाकर मेरा पान लगा दो।"

"कैसे आदमी हो, कोई सुनेगा तो क्या कहेगा कि पान के लिए एक अनमोल मोती जलाया जा रहा है।"

राजा ने वार्तालाप सुना और आश्चर्यचकित रह गया कि यह सेठ कैसा आदमी है जो बात की बात में सम्पन्न हो गया।

सवेरे-सवेरे ही राजा ने सेठ को पकड़कर बुलवाया और पूछा, "बतलाओ बड़ा कौन है, हम या तुम?"

सेठ ने हाथ जोड़कर कहा, "बड़े तो आप हैं दयानिधान! कहां आप और कहां मैं एक मामूली सेठ!"

राजा ने डांटकर कहा, "साफ़-साफ़ उत्तर दो, नहीं तो तुम्हें और तुम्हारे बहू-बेटों को जेल की हवा खानी पड़ेगी।"

सेठ ने कहा, "जैसी आपकी आज्ञा। कल इस बात का उत्तर आपको मिल जाएगा।"

सेठ ने घर जाकर सारी बात सुनाई तो छोटी बहू ने कहा, "आप राजा से कहलवा दें कि इस छोटे-से सवाल का उत्तर मैं क्या दूं मेरी छोटी बहू देगी लेकिन वह इसके लिए रनिवास

भरवायें और मुझे लेने पालकी भेजें।"

राजा ने वैसा ही किया। जब सब दरबार में पहुंच गए तो राजा ने पूछा, "बड़ा कौन है, हम या तुम्हारे ससुर?"

छोटी बहू ने उत्तर दिया, "बड़े आप ही हैं। हम बड़े कैसे हो सकते हैं? आप जैसे बड़े लोग ही मेरे ससुर की सम्पत्ति ज़ब्त कर सकते हैं। हम सबको देश निकाला दे सकते हैं, और अपने बाहुबल से हम फिर सुखी हो जाएं तो फिर जेल की हवा खिलाने की धमकी दे सकते हैं।"

राजा ने बीच में कहा, "बड़ा वह क्यों नहीं जो पक्का मोती जलाकर उसकी राख से पान खाना चाहता था?"

"यह सब समय की बात है।" छोटी बहू ने उत्तर दिया, "हम दिन के अच्छे बीतने में भरोसा करते हैं और हर दिन को एक समान मानते हैं।"

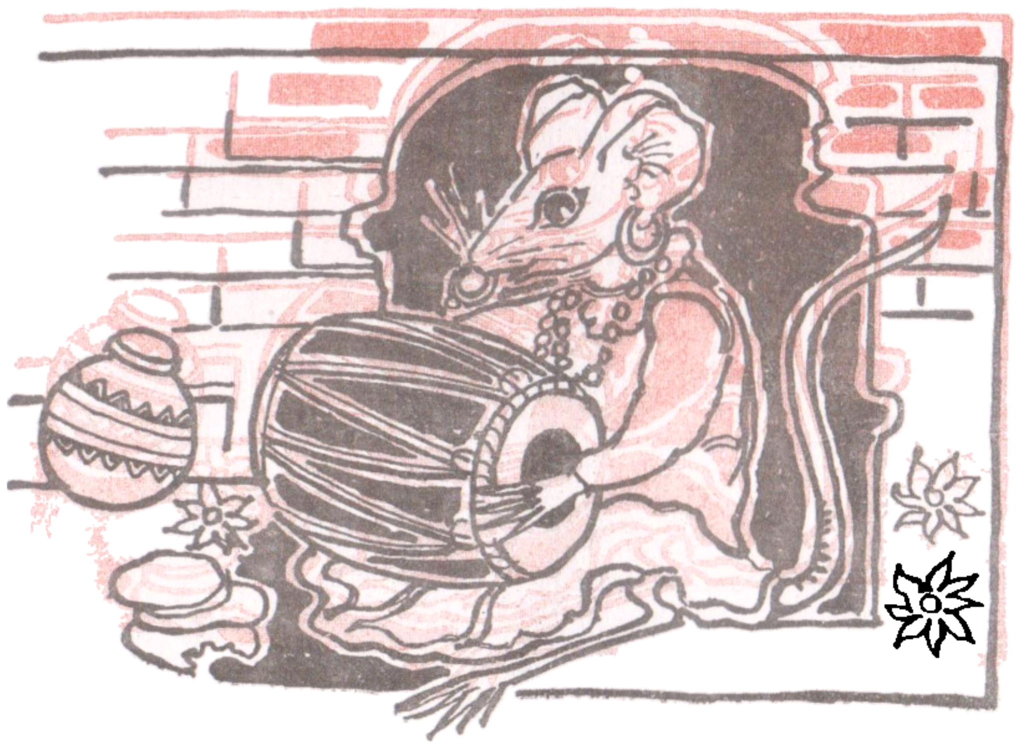
उत्तर सुनकर राजा की आंखें खुल गईं। उसने सेठ की सारी सम्पत्ति लौटा दी और अपने नगर में उसे सम्मान सहित वापस बुला लिया।

बज मोरी ढुलकी तामकतूम

एक ज़माने में एक चुहिया रानी रहती थी। उसे इधर-उधर की चीज़ें बटोरने का बड़ा शौक था। एक दिन उसे रास्ते में पड़ी एक लकड़ी मिल गई। उसे देखते ही वह बड़ी खुश हुई कि हो न हो यह काम की चीज़ है। लकड़ी को उठाकर वह अपने बिल में चली आई।

एक दिन वह फिर घूमने गई तो राजमहलों से दूर एक झोंपड़ी में एक बुढ़िया गीले उपलों से चूल्हा जला रही थी। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे और आग सुलग नहीं रही थी। सहानुभूति से चुहिया ने पूछा, "क्या बात है?" बुढ़िया ने उत्तर दिया, "राजा ने लकड़ी न काटने की मुनादी कर दी है और इसी से उपलों से चूल्हा जलाना पड़ता है।" चुहिया रानी ने दया से पसीजकर अपने पास रखी लकड़ी बुढ़िया को लाकर दे दी। बुढ़िया ने खुश होकर रोटी पकाई और एक रोटी चुहिया रानी को भेंट में दे दी। चुहिया रोटी लिए खुशी-खुशी चली।

उसने सामने देखा कि एक कुम्हार का लड़का मारे भूख के रो रहा है। उसकी मां बरतन बना रही थी और बीच में उठकर रोटी नहीं पका सकती थी। चुहिया रानी ने फिर दया



से पसीजकर रोटी उस बच्चे को दे दी। बच्चा चाव से रोटी खाने लगा। कुम्हार ने यह देखा और सोचा कि चुहिया ने हमारी मदद की है सो इसे कुछ भेंट में देना चाहिए। उसने एक बढ़िया मटकिया चुहिया को भेंट में दे दी। चुहिया मटकिया लिए ठुमकती हुई चली।

रास्ते में एक अहीर का घर पड़ता था। चुहिया रानी ने सुना कि घर के अंदर पति-पत्नी में किसी बात को लेकर झगड़ा चल रहा है। उसने कान लगाकर सुना तो पता चला कि पति-पत्नी को मार रहा है, क्योंकि अहीरन से दही बिलौने की मटकिया फूट गई थी। चुहिया रानी को मामला समझ में आ गया तो उसने दरवाज़ा खटखटाया और मटकिया अहीर को भेंट में दे दी। अहीर-अहीरन दोनों खुश हो गए। मटकिया के बदले में अहीर ने चुहिया रानी को कुछ देने की सोची। उसने सोच-विचार कर अपने खटाल में से एक भैंस चुहिया को भेंट में दे दी।

चुहिया रानी भैंस को लेकर खुशी मन से चली। लेकिन वह भैंस को बांधे तो कहां, खिलाये तो क्या, दूध दुहे तो कैसे? चुहिया ने सोचा कि भैंस बढ़िया है और वह अगर इसे राजा को भेंट कर दे तो वह खुश हो जाएगा। वह राजा के दरबार में पहुंची। राजा भैंस पाकर खुश हो गया। उसने ऐसा त्याग और परोपकार देखा ही नहीं था। बदले में उसने अपनी एक रानी को चुहिया के साथ भेज दिया कि वह उसकी देखभाल करेगी।

चुहिया रानी के साथ बात करती अपने घर की तरफ़ चली। रास्ते में एक अकेला मतवाला आदमी ढोलक पीट रहा था। उसने बताया, "मेरी शादी नहीं हुई सो मैं अकेला दुखी

मन ढोलकी पीटता रहता हूं।" चुहिया ने दया करके साथ आई रानी का विवाह उस मतवाले के साथ कर दिया। मतवाला खुश हो गया और उसने बदले में वह ढोलक चुहिया को भेंट में दे दी।

चुहिया रानी खुश होकर ढोलक लिए अपने घर लौटी और एक ऊंचे टीले पर बैठकर अपनी आत्मकथा गाने लगी—

अल्ल में गई दल्ल में गई
दल्ल में से लकड़ी लाई
लकड़ी मैंने डुक्को को दई
डुक्को ने मोय कुच्चो दई
कुच्चो मैंने कुम्हार को दई
कुम्हार ने मोय मटकिया दई
मटकिया मैंने अहीरे दई
अहीर ने मोय भैंस दई
भैंस मैंने राजे दई
राजा ने मोहे रानी दई
रानी मैंने मतवाले दई
मतवाला मोहे ढुलकी दई
बज मोरी ढुलकी तामकतूम
रानी के बदले आई तूम।

पाप का पिता

एक था राजा। बड़ा भारी था उसका राज। एक दिन उसने सोचा कि पाप बहुत बुरा है तो उसके पिता का नाम जानना चाहिए। उसने अपने सारे मंत्रियों को बुलाया और पूछा, ''पाप के पिता का नाम क्या है?''

मंत्रियों ने जवाब दिया, ''किसी के पिता का नाम हम कैसे जान सकते हैं! वह राजपुरोहित को मालूम होगा। नामों का हिसाब तो वही रखता है।''

राजा ने राजपुरोहित को बुला भेजा। उससे कहा, ''खाते देखकर बतलाओ कि पाप के पिता का नाम क्या है?''

राजपुरोहित परेशान हो गया। ऐसी समस्या उसके सामने अब तक नहीं आई थी। उसने कहा, ''खाते कई हैं। सबको खोजना होगा। आप मुझे एक महीने की मोहलत दें तो मैं नाम खोज कर बतला सकूंगा।''

राजा ने मोहलत दे दी। अब राजपुरोहित रास्ते-रास्ते भटकता हुआ जो कोई भी मिल जाता, उसी से पूछता-फिरता कि पाप के पिता का नाम क्या है? लोग उसे पागल समझते और उससे बचकर निकल जाते। जब एक महीने की मोहलत की समाप्ति का समय आ गया तो वह परेशान हो गया।



एक दिन वह एक रास्ते से गुजर रहा था तो सामने आती एक वेश्या दिखाई दी। उससे भी उसने एक प्रश्न पूछा। वेश्या ने कहा, "मैं तुम्हें पाप के पिता का नाम बतला सकती हूं।"

राजपुरोहित को कुछ आशा बंधी। वह बोला, "मुझे पाप के पिता का नाम बताकर किसी भी शर्त पर बचा लो।"

वेश्या ने कहा, "ठीक है। नहा-धोकर कल सवेरे मेरे घर एक सेर रसगुल्ले लेकर आ जाना।"

मरता क्या न करता! राजपुरोहित ने रसगुल्ले ख़रीदे और नहाने के बाद चंदन-तिलक लगाकर उस वेश्या के घर जा पहुंचा।

वेश्या बोली, "मुझे समाज कुलटा कहता है और आप हैं जाने-माने पंडित, क्या आप मेरा कहना मान सकेंगे?"

राजपुरोहित ने कहा, "आप जो कहें, वही करने को मैं तैयार हूं।"

वेश्या ने कहा, "तुम मेरे पैरों पर सिर रखकर लेट जाओ और मैं रसगुल्ले खाऊंगी। जो लार टपके उसे चाटते रहो तो मैं पाप के पिता का नाम बतला दूंगी।"

राजपुरोहित ने वैसा ही किया। वेश्या के शरीर पर टपकती हुई लार को वह चाटने लगे। सहसा वेश्या ने तड़ाक्-तड़ाक् उसके गाल पर तीन-चार चांटे एक साथ जड़ दिए। अब तो राजपुरोहित हैरान रह गया। तब वह वेश्या बोली, "पाप के पिता का नाम है लोभ। बदमाश कहीं के! कल तक तू मुझे वेश्या कहता था, कुलटा के नाम से पुकारता था और आज मेरे तलुवे चाटने को तैयार हो गया।"

राजपुरोहित का सिर शर्म से झुक गया। वह वहां से

उठकर सीधे दरबार में गया और सभी लोगों को सच्ची घटना सुना दी।

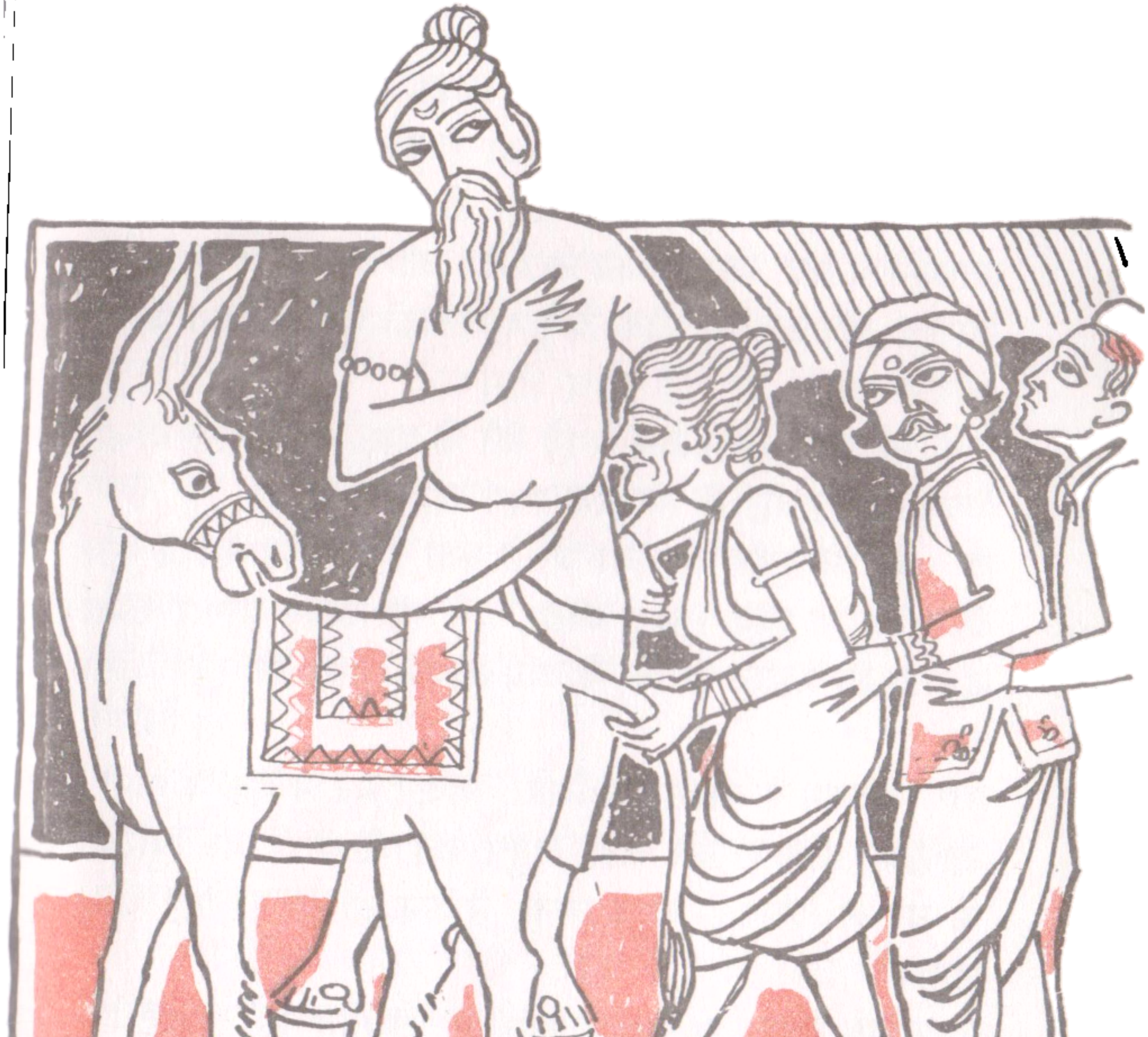
राजा को अपने सवाल का जवाब मिला। राजपुरोहित को ज्ञान की प्राप्ति हुई और ज़माने ने पाप के पिता का नाम जाना।

जो स्वर्ग गए

एक राजा था। वह सिरफिरा तो नहीं था, लेकिन उसे अजीबो-ग़रीब बातें सुनने का शौक था। वह चाहता था कि उसका मंत्री अनहोनी बातें करे। लेकिन उसका मंत्री था सीधा-सादा आदमी। जब राजा उससे कई बार यह कह चुका कि ठीक काम नहीं किया तो मैं दूसरा मंत्री रख लूंगा, तो बेचारे ने परेशान हो, दो महीने की छुट्टी ले ली कि वह बीमार है और बाहर जाना चाहता है।

मंत्री चुपचाप छिपा रहा और उसने दाढ़ी बढ़ा ली। कुछ समय बाद मंत्री ने शंकर भगवान का-सा वेश बना लिया और एक भक्तिन बुढ़िया के घर आधी रात के समय तब जा पहुंचा जब वह भगवान का ध्यान लगाए थी। बुढ़िया समझी कि सचमुच शंकर भगवान आए हैं। इसी तरह जब वह दो-चार बार उसके घर गया तो वह बोली, "भगवान, मैं तो स्वर्ग जाना चाहती हूं। अब तो मेरी लकड़ियां भी मसान में जा पहुंची हैं।" 'भगवान' ने कहा, "तो ठीक है। स्वर्ग का दरवाज़ा कल खुल रहा है। मैं रात को दो बजे आऊंगा और तुझे स्वर्ग पहुंचा दूंगा।"

बुढ़िया दूसरे दिन सवेरे से ही स्वर्ग जाने की आस लगाने



लगी। सहसा उसे ख़्याल आया कि महाजन के रुपए चुकाने हैं, कौन जाने रुपए न चुकाने से फिर नरक में डाल दी जाऊं। सो बुढ़िया महाजन के पास पहुंची। महाजन ने कहा, "ऐसी क्या जल्दी है मेरे रुपये चुकाने की?"

जब महाजन ने बहुत ही पूछा तो उसने कह दिया, "किसी से कहना मत, मैं स्वर्ग जा रही हूं और भगवान शंकर मुझे खुद लेने आएंगे।"

महाजन ने सोचा, दिन-रात बेटा जायदाद हड़पने की सोचता रहता है, इससे तो अच्छा है कि मैं भी स्वर्ग चला जाऊं। उसने जब बुढ़िया से कहा तो वह घबरा गई, लेकिन महाजन ने यह बात सबको बता देने की धौंस दी। इससे वह डर गई और बोली, "ठीक है, तुम रात को एक बजे आ जाना, लेकिन आंखों पर पट्टी बांध लेना।"

महाजन खुश होकर अपने बेटे के पास गया उससे बोला, "यह लो चाबी, मैं तो अब स्वर्ग जा रहा हूं।"

बेटे ने पूछा कि ऐसी जल्दी क्या है तो महाजन ने सब किस्सा सुना दिया। बेटा बोला, "मैं तो हमेशा बीमार रहता हूं। इससे बेहतर है कि मैं भी आपके साथ ही स्वर्ग चला चलूं।"

महाजन ने लाख मना किया, लेकिन बेटे ने एक न मानी। आख़िर उसने हारकर कहा, "तुम रात के बारह बजे बुढ़िया के घर के पिछवाड़े पहुंच जाना, लेकिन आंखों पर पट्टी बांध लेना।"

बेटा तैयार हो गया। शाम को राजवैद्य उसे दवाई देने आए तो उसने कहा, "अब मुझे दवाई की ज़रूरत नहीं है।"

कारण पूछने पर लड़के ने असली बात बता दी। अब

राजवैद्य भी स्वर्ग जाने को तैयार हो गया। महाजन के बेटे ने कहा, "आप बारह बजे यहीं आ जाना हम साथ चलेंगे आंखों पर पट्टी बांधनी होगी।"

सहसा राजा उसी शाम बीमार हो गया तो राजवैद्य को बुलाया गया। राजवैद्य ने जाकर कहा, "मैं अब आपका उपचार नहीं कर सकूंगा, क्योंकि आज ही मर जाने वाला हूं।"

राजा को इस वाक्य से आश्चर्य हुआ। उसने खोद-खोदकर सब बातें पूछीं। राजवैद्य ने सब कुछ बता दिया। अब तो राजा भी स्वर्ग जाने को तैयार हो गया। राजवैद्य ने उसे भी बारह बजे का समय दे दिया।

इस तरह सब लोग इकट्ठे होकर एक बजे रात को बुढ़िया के घर के पिछवाड़े जाकर आंखों पर पट्टी बांधकर खड़े हो गए।

बुढ़िया जब तैयार हो गई तो ठीक दो बजे 'शंकर भगवान' एक गधे को लेकर पधारे। आकर वह बोले, "तुम गधे की पूंछ पकड़ो और बाकी सब लोग एक-दूसरे को पकड़ लो। यह जानवर जहां जाए वहां बढ़ते जाना। अगर पूंछ को छोड़ा या किसी ने एक-दूसरे की पकड़ छोड़ी तो तुम सब नरक में जा गिरोगे।"

स्वर्ग की सैर शुरू करने के लिए 'शंकर भगवान' ने गधे को एक एड़ लगा दी। गधा भागने लगा और उसकी पूंछ पकड़े ये सब भी भागे।

मंत्री ने घर जाकर दाढ़ी उतरवा दी और पहले जैसा रूप धारण कर लिया। सवेरे-सवेरे गधा जब राजमहल के सामने से गुजरा, सब लोग कनखियों से हंसकर प्रणाम करने लगे। राजा समझा स्वर्ग का वातावरण भी अच्छा ही है। तभी मंत्री

उनके सामने आ गया। मंत्री को देखकर वह बोले, "अरे मंत्री जी, आप यहां कैसे?"

मंत्री ने कहा, "राजा साहब मेरी गुस्ताख़ी माफ़ करें। आप जहां थे वहीं हैं और मैं आपका मंत्री हूं, छुट्टी से आज ही लौटा हूं। यह सब जो मैंने किया, एक छोटा-सा मज़ाक है, क्योंकि आपको ऐसा मज़ाक पसंद है।"

राजा को मंत्री की बात सुनकर हंसी आ गई।

फिर वही राजा राज करने लगा और वही मंत्री सलाह देने लगा।

गीत की ख़रीद

एक ऐसी स्त्री थी जो लड़ने-झगड़ने में अव्वल थी, बात-बेबात झगड़ा मोल लेती और बात करती तो ऐसा लगता जैसे खाने दौड़ रही हो। उसका पति क्या और पड़ोसी क्या, सब ही उससे थर-थर कांपते।

एक दिन की बात कि उसने अपनी पड़ोसन को गीत गाते सुना। वह उसके पास जा पहुंची और बोली, ''यह बताओ कि गीत कैसे गाये जाते हैं?''

पड़ोसन कर्कशा को खूब जानती थी, सो बोली, ''गीत पाना तो बहुत आसान है, ये तो बाज़ार में बिकाऊ मिलते हैं, ख़रीदकर मंगवा लो।''

उसकी बात सुनकर वह घर पहुंची और अपने पति से बोली, ''तुम बाजार जाकर मुझे गीत ला दो।''

पति बाजार गया और एक दूकानदार से पूछा, ''क्यों भाई गीत है क्या?''

दूकानदार समझा कि यह कोई गंवार है, सो बोला, ''आगे जाओ, वहां मिलेंगे।''

वह जगह-जगह भटका, लेकिन गीत बिकते हों तब तो मिलें।

शाम हो गई। अब उसे डर लगने लगा कि अगर बग़ैर गीत के घर पहुंचा तो कर्कशा का सामना करना मुश्किल हो जाएगा।

इसी उधेड़बुन में जब वह चला जा रहा था तो उसने एक चूहे को बिल के अंदर घुसते देखा। उसे आवाज़ सुनाई दी-'खर्र्-खर्र्।' इससे एक पंक्ति बनी—'खोदे खर्र् खर्र...।'

आगे जाकर उसने एक सांप को सरकते देखा। उसकी आवाज सुनकर दूसरी पंक्ति बनी—'सरके सर्र सर्र...।'

आगे चलते हुए उसे एक खरगोश दिखाई दिया। आदमी को देखकर वह गौर से देखने लगा। पंक्ति बनीं, देखे टगर-मगर....।

और आगे चलकर उसने छलांग लगाकर भागते हुए हिरण को देखा। उसने चौथी पंक्ति बना ली—'कूदे अलंग-फलंग!'

घर लौटकर उसने कर्कशा से कहा कि मैं गीत ख़रीद लाया हूं। उसने गीत सुनाया—

'खोदे खर्र खर्र, सरके सर्र सर्र,

देखे टगर-मगर, कूदे अलंग-फलंग।'

कर्कशा समझी कि यह वाकई गीत है, सो वह उसे राग से गाने लगी।

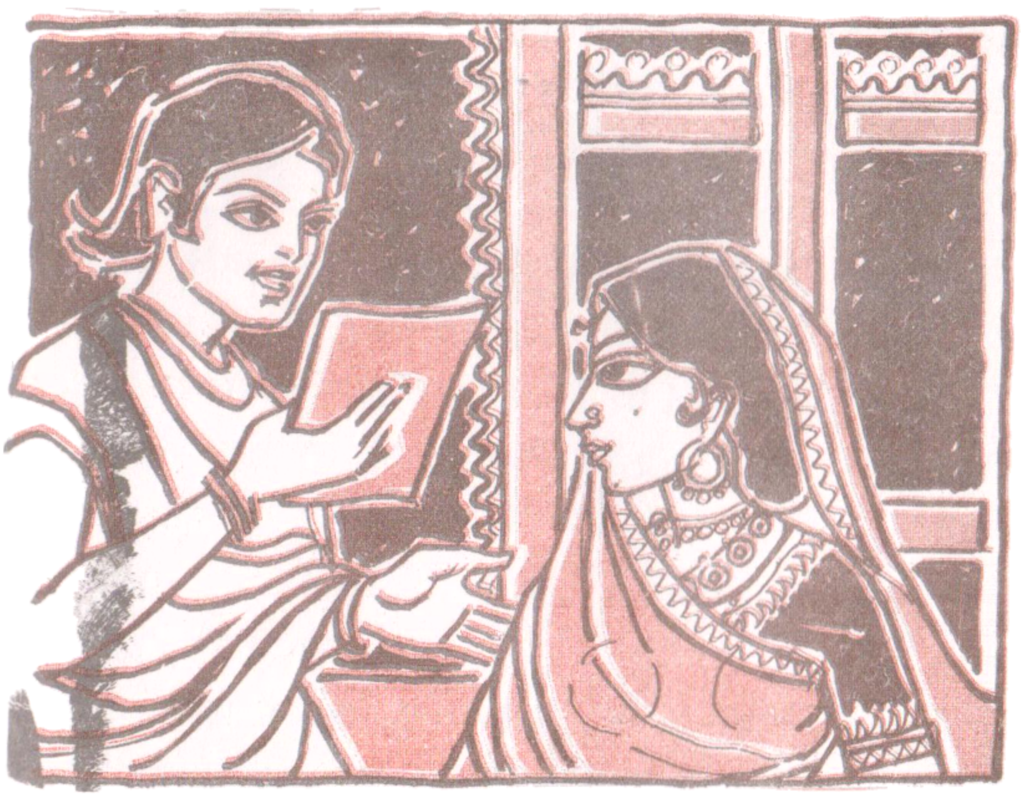
आधी रात को वह जगी और पड़ोसियों को प्रभावित करने की ग़रज़ से गेहूं पीसती हुई वही गीत गाने लगी।

संयोग की बात कि उसी समय चोरों ने उसके घर में चोरी करने के लिए सेंध लगाई थी।

चोरों ने खोदना शुरू किया।

—खोदे खर्र खर्र...।

चोरों ने समझा वह उन्हें देखकर गा रही है सो चुपचाप सरकने लगे।



—सरके सर्र सर्र...।

चोर अब डरकर दरवाज़े की तरफ देखने लगे।

—देखे टगर-मगर....।

चोरों को भरोसा हो गया कि वह स्त्री सब कुछ जानती है सो भाग खड़े हुए। इसी समय उसने आख़िरी पंक्ति गाई—

—कूदे अलंग-फलंग....।

चोर थे तो भाग खड़े हुए। सवेरे जब पति ने दरवाज़े के पास सेंध देखी तो आश्चर्यचकित रह गया। जब उसे मालूम हुआ कि इस गीत के सुनने से चोर भागे हैं तो पति ने छाती फुलाकर कहा,"देखा, कितना बढ़िया गीत ख़रीदकर लाया हूं!"

कर्कशा जीवन में पहली बार प्रसन्न हुई।

चतुर सियार

एक बनिये ने व्यापार के लिए किसी दूसरे नगर में जाने की सोची। उसके पास एक अच्छा घोड़ा था। उसी पर सवार होकर, अपनी सारी पूंजी आदि बटोरकर वह व्यापार करने निकला। राह में उसे एक सियार मिला। बेचारा सियार दलदल में फंस गया था और बड़े कष्ट में था। उसने बनिये को पुकारा और इस कष्ट से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना की। लेकिन सियार जाति का विश्वास कौन करे! बनिये ने अपनी दुविधा कही, "सियार बड़े विश्वासघाती होते हैं। इसलिए मैं तुझे दलदल से नहीं निकालूंगा।"

सियार ने बड़े नम्र भाव से कहा, "नहीं भैया, कृपा करके मुझे यहां से निकाल दो, मैं मुश्किल के समय तुम्हारे काम आऊंगा।"

बनिये ने उसे निकाल दिया और अपनी राह चल दिया। शहर पहुंचकर एक तेली के घर उसने रात काटने का विचार किया। अपना घोड़ा उसने बाहर एक खूंटे से बांध दिया और अंदर जाकर आराम करने लगा। वह थका हुआ था, अतः शीघ्र ही गहरी नींद में डूब गया।

दूसरे दिन सुबह तेली सोकर उठा, और बनिये का घोड़ा खोलकर उसपर बैठकर बाहर जाने लगा। अचानक बनिये की

दृष्टि उस पर पड़ी। उसने चिल्लाकर कहा, "ओ भैया, मेरा घोड़ा कहां लिए जा रहे हो?" तेली ने बड़े रौब से उत्तर दिया, "यह तो मेरा घोड़ा है।"

बनिया रुआंसा हो आया। बोला, "नहीं, यह मेरा है, कल मैं इस पर बैठकर यहां आया था।"

तेली बहुत चालाक था। उत्तर शायद उसने पहले ही तैयार कर रखा था, बोला, "तू झूठ बोलता है, मेरा खूंटा प्रति वर्ष एक घोड़े को जन्म देता है। इस घोड़े को इसने इसी रात जन्म दिया है।"

"वाह! ऐसा भी कहीं होता है! क्या खूंटा भी घोड़े को जन्म दे सकता है?" बनिये ने दांतों तले उंगली दबा ली।

"क्यों नहीं, मेरा खूंटा तो ऐसा ही है। विश्वास न हो तो पड़ोसियों से पूछ लो।" तेली ने बड़े दृढ़ स्वर में उत्तर दिया जैसे उसी की बात सच हो। बनिया बड़े असमंजस में पड़ गया। फिर उसे लगा कि शायद पड़ोसियों से ही कुछ सहायता मिल सके। लेकिन वह सारा मोहल्ला ही ठगों का था और यह तेली उनका सरदार था। सबने तेली का पक्ष लेकर कहा, "तेली की बात सौ प्रतिशत सच्ची है।" बेचारा बनिया बड़े संकट से घिर गया। परदेश का मामला। ठग लोगों की दुश्मनी से वह बहुत घबरा गया। आख़िर अपनी बुद्धि से हारकर वह अदालत में न्यायाधीश के पास गया और अपनी कथा सुनाई। उस तेली उर्फ़ ठगों के सरदार को बुलवाया गया। उसने अपने पड़ोसी ठगों को गवाह के रूप में न्यायाधीश के सामने पेश कर दिया। सबने यही कहा कि तेली का खूंटा बड़ा चमत्कारी है। वह प्रति वर्ष एक घोड़े को जन्म देता है और बनिया जिसे अपना घोड़ा कहता है, उसे पिछली रात इसी खूंटे ने जन्म दिया है। यह गवाही सुनकर न्यायाधीश भी थोड़ी देर के लिए चकरा



गया। सत्य क्या है, यह उसे भी मालूम था, लेकिन उसे प्रमाणित कैसे करे। उसने बनिये से भी कोई गवाह पेश करने को कहा। बनिये को एकाएक सियार की याद आई। वह उसे बुला लाया। सियार ने बनिये से कहा कि मैं बाहर बरामदे में सोऊंगा, तुम मुझे जगाना मत। और वह सो गया। बनिये ने न्यायाधीश को सूचना दे दी कि उसका गवाह आ गया है। चपरासी ने उसे पुकारा पर वह न जागा। आख़िर चपरासी उसके पास आया और उसे एक ठोकर लगाकर कहा, "अदालत सोने की जगह नहीं है, चलो न्यायाधीश के सामने!"

सियार उठकर न्यायाधीश के सामने खड़ा हो गया। न्यायाधीश ने खीजकर पूछा, "क्या तुम रात को सोये नहीं थे, जो यहां सो रहे हो?"

"हुजूर, रात को एक तालाब में बड़े ज़ोरों की आग लग गई थी। उसमें सब मछलियां जल मरीं। मैं रात-भर वे मछलियां चुन-चुनकर खाने में ही लगा रहा।" सियार ने बड़ी युक्ति से आंखें मलते हुए उत्तर दिया।

न्यायाधीश को उसके धूर्त उत्तर पर क्रोध आ गया, "क्या बकता है? पानी में भी कभी आग लग सकती है?"

सियार को इसी मौके की तलाश थी। उसने अपना तर्क दिया, "फिर आप तेली की बात पर कैसे विश्वास करते हैं? क्या निर्जीव खूंटा भी कभी घोड़े को जन्म दे सकता है?"

अब सारी बात न्यायाधीश की समझ में आ गई। उसने सिपाहियों को हुक्म दिया कि तेली को हवालात में बंद कर दिया जाए और बनिये को उसका घोड़ा लौटा दिया जाए। बनिया सियार की मित्रता से कृतज्ञ हो उठा। न्यायाधीश भी उसकी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा किए बग़ैर न रह सका।

कपाल और गोपाल

एक गांव की बात है। दो जिगरी दोस्त थे। गोपाल राजा के राज्य में रहते थे। एक ब्राह्मण—पूजापाठ करनेवाला, दूसरा था भाट—राजा की तारीफ के पुल बांधनेवाला।

बरसों जब उन्हें एक-साथ रहते हो गए तो भाट ने कहा, "हम लोग अब राजा के दरबार में चलें। गोपाल राजा खुश हो गया तो हमारे भाग्य खुल जाएंगे।"

ब्राह्मण को यह बात पसंद नहीं आई। उसने बात को टाल दिया और कहा, "देई तो कपाल, का करही गोपाल। —कपाल में होगा तो धन मिलेगा, इसमें गोपाल क्या करेगा?"

भाट को बात गले नहीं उतरी, वह बोला, "देई तो गोपाल, का करही कपाल। —अरे देगा तो गोपाल राजा ही, इसमें भाग्य-वाग्य क्या करेगा?"

दोनों में ख़ासा वाद-विवाद हुआ और दोनों अपनी-अपनी बात को लेकर दरबार में पहुंच गए।

ब्राह्मण का यह कहना सुनकर कि 'देई तो कपाल' गोपाल राजा खुश नहीं हुआ, लेकिन भाट का कहना सुनकर कि 'देई तो गोपाल' वह खुशी से फूल गया।

राजा चतुर था सो उसने ऊपर से कुछ नहीं दिखाया और

दोनों को दूसरे दिन दरबार में बुलाया।

ब्राह्मण और भाट दोनों दरबार में पहुंचे। राजा ने ब्राह्मण को एक-एक मुट्ठी चावल, दाल और कुछ नमक दे दिया। भाट को उसने एक-एक सेर चावल घी दिया और एक बहुत बड़ा कुम्हड़ा दे दिया। दान देकर राजा ने दोनों से कहा, "तुम दोनों जाकर भोजन पकाकर खाओ और शाम को फिर दरबार में मिलना। तुम जब मिलोगे तो पता चल जाएगा कि गोपाल देता है या कपाल?"

ब्राह्मण और भाट दोनों नदी किनारे जाकर खाना पकाने लगे।

ब्राह्मण भोजन पकाना शुरू कर ही रहा था कि भाट ने कहा, "भाई, राजा ने जाने क्या सोचकर मुझे कुम्हड़ा दे दिया। कुम्हड़ा खाने से मेरी कमर का पुराना दर्द फिर उभर आएगा। अच्छा यह होगा कि कुम्हड़ा तुम ले लो और दाल मुझे दे दो।"

ब्राह्मण भाट की बात मान गया। उसने दाल उसे दे दी। भाट ने दाल-भात पकाये और खा-पीकर सो गया।

ब्राह्मण ने सब्ज़ी बनाने के लिए कुम्हड़ा काटा तो देखा कि उसके अन्दर सोना भरा हुआ है। गोपाल राजा ने खुद ही भाट के कुम्हड़े में सोना रखवा दिया था। ब्राह्मण ने सोना अपनी धोती में बांधा और आधे कुम्हड़े की सब्ज़ी बना-खाकर आधा कुम्हड़ा सम्भालकर रख लिया।

शाम को जब दोनों दरबार में पहुंचे तो राजा ने ब्राह्मण से कहा, "कहो महाराज, अब इस बात को मानते हो या नहीं कि देगा गोपाल तो क्या करेगा कपाल?"

ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "मैं तो अब भी इसको ही मानता



हूं कि देगा कपाल तो क्या करेगा गोपाल।''

यह कहकर ब्राह्मण ने आधा कुम्हड़ा राजा को दिखा दिया कि किस तरह भाट ने वह उसे दे दिया था।

राजा ने हार मान ली और कहा, ''ठीक है, भाग्य ही बलवान होता है, व्यक्ति नहीं।''

फिर राजा ने दोनों को खूब दान-दक्षिणा दी और विदा किया।

ठुनठुनिया मेरा नाम

छत्तीसगढ़ के एक गांव की बात है। एक पति-पत्नी राज़ी-खुशी रहते थे। वे साधारण जाति के थे सो बड़े लोगों से उनका मेल-मिलाप नहीं था। पति का नाम था ठुनठुनिया। एक दिन उसकी पत्नी पानी भरने गई तो एक महिला ने उस पर व्यंग्य कसा, "जैसा ठुनठुनिया नाम, वैसा ही ठुनठुनिया काम।"

पत्नी को बुरा लग गया। वह घर आई और अपने ठुनठुनिया से बोली, "तुम अपना नाम बदल लो। मैं लोगों के बोल नहीं सह सकती।"

ठुनठुनिया ने बहुत समझाया, "अरी भागवान, नाम में क्या धरा है?"

"धरा कैसे नहीं? टके की औरत मुझे ताना मार गई और तुम कहते हो कि नाम में कुछ धरा नहीं है। जब तक तुम नया नाम ढूंढकर नहीं लाओगे, मैं खाना नहीं पकाऊंगी।"

पत्नी के सामने तो भगवान भी हारा है ! सो ठुनठुनिया ने लोटा-डोर उठाई और बेचारा चला नाम की खोज में।

दर-कूच-दर-मुकाम ठुनठुनिया सुन्दर नाम की तलाश में चला। चलते-चलते रास्ते में उसे एक अर्थी आती दिखाई दी। लोग लाश को कंधों पर लिए जा रहे थे और 'राम नाम सत्य है' बोलते जाते थे। ठुनठुनिया ने सोचा कि यह आदमी मर गया है सो इसका नाम मैं रख सकता हूं। पूछा उसने, "कौन मर गया है भाई?"

उत्तर मिला, "अमरनाथ।"

नाम सुनकर ठुनठुनिया दुःखी हो गया, "यह कैसा अमरनाथ जो मर जाता है! उसने सोचा, ऐसे नाम से क्या फ़ायदा जिसका जीवन की हकीकत से कोई संबंध न हो।

वह आगे चला। चलते-चलते उसे एक खेत-मज़दूर दिखाई दिया जो पयाल कूट रहा था। उसे मेहनत करते देखकर ठुनठुनिया बहुत प्रभावित हुआ। सोचने लगा, इसका नाम ही मैं रख लूंगा। पूछा उसने, "क्या नाम है भाई तुम्हारा?"

"धनपति।"

नाम सुनकर ठुनठुनिया फिर दुःखी हो गया कि नाम बड़े लेकिन दर्शन छोटे हैं। नाम धनपति, काम मज़दूरी। ऐसे नाम में क्या धरा है।

वह आगे चला। चलते-चलते उसे एक बोझा उठानेवाला मिला। वह पसीने में तर-बतर था। उससे भी ठुनठुनिया प्रभावित हुआ। पूछा, "क्या नाम है भाई तुम्हारा?"

"मेरा नाम लक्ष्मण योगी है।"

नाम जोगी और काम बोझ उठाने का...! ठुनठुनिया फिर दुःखी हो गया। परेशान होकर उसके मुंह से कुछ शब्द फूट पड़े,



"अमरनाथ को मरते देखा
धनपति को धुनते पयार!
लक्ष्मण योगी बोझा ढोता
ठुनठुनिया उतरेगा पार।"

उसकी खोज़ खत्म हो गई। वह घर लौट आया। पत्नी को सारी घटना सुनाई तो वह खुद ही बोली, "पार उतरना होगा तो ठुनठुनिया ही पार उतर जाएगा।"

एक था नाग

निमाड़ के एक गांव में एक विधवा रहती थी। उसका एक लड़का था। विधवा जब बाज़ार गई थी तो एक साधु आया। लड़के ने साधु से कहा, "मुझे शिक्षा दीजिए।"

साधु ने शिक्षा दी, "बिन पैसे बाज़ार मत जा, बिन साथी बाहर मत निकल।" शिक्षा लड़के को इतनी अच्छी लगी कि उसने साधु को सौ रुपए निकालकर दे दिए।

मां जब घर लौटी तो लड़के ने बतलाया कि उसने सौ रुपयों में शिक्षा ख़रीदी है। मां इस फ़िज़ूलख़र्ची की बात सुनकर नाराज़ हो गई। लड़के को यह बात अच्छी नहीं लगी और वह घर छोड़कर चल दिया।

बाहर निकलते ही उसे साधु की शिक्षा याद आई। सामने ही उसे एक केकड़ा दिखाई दिया, उसने उसे ही अपने साथ ले लिया।

जब वह चलते-चलते थक गया तो एक पेड़ के नीचे बैठ गया। केकड़े को उसने एक तरफ़ रख दिया। उसी पेड़ पर एक कौआ रहता था और नीचे बिल में एक नाग रहता था। इन दोनों में थी मित्रता। जब भी कोई पेड़ के नीचे आकर टिकता, कौआ बोलने लगता और उस आवाज़ को सुनकर नाग

बाहर आकर सोए हुए आदमी को डस लेता।

कौए ने जब इस लड़के को पेड़ के नीचे सोया देखा तो वह बोलने लगा। नाग बाहर आया और उसने लड़के को डस लिया, लड़का मर गया। फिर कौआ उसका मांस नोचने के लिए नीचे आकर मरे हुए लड़के के सिर पर बैठ गया। केकड़े ने पीछे से जाकर उसे काट लिया। कौआ मारे डर के नाग को पुकारने लगा कि बाहर आकर लड़के को ज़िन्दा कर दो, उसके दोस्त ने मुझे मुसीबत में डाल दिया है। नाग बाहर आया और उसने उसका ज़हर खींच लिया। कौआ तो अधमरा था ही। अब जब नाग बिल में जाने लगा तो केकड़े ने उसे भी काट लिया।

लड़का जीवित हो उठा और नाग तथा कौआ दोनों मर गए।

चलने से पहले लड़के ने कौए का पंख और सिर तथा नाग का सिर और पूंछ काटकर अपने पास रख लीं। फिर उसने आगे जाकर एक खेत पर नौकरी कर ली, जहां उसे कड़ी मज़दूरी करनी पड़ती थी।

उस नाग की चर्चा वहां सब तरफ फैली हुई थी क्योंकि, वह कई लोगों को डस चुका था। सो राजा ने डोंडी पिटवा दी कि जो कोई उस आदमखोर नाग का सिर और पूंछ लाकर देगा, राजा अपनी बेटी की शादी उसी से कर देगा।

हुआ यह कि एक मेहतर ने राजा की डोंडी सुनी और उसने पेड़ के नीचे पड़े नाग के शव को देखा। मरे हुए नाग को उसने और मारा और उसे उठाकर राजा के पास ले गया। राजा ने पूछा नाग का सिर और पूंछ कहां है तो उसने कह दिया कि नाग को मारने में सिर और पूंछ खो गए।

तभी वह लड़का राजा के पास पहुंच गया और उसने नाग



का सिर और पूंछ उसे देकर कहा, "नाग को मारनेवाला असली आदमी तो मैं हूं।"

राजा ने राजकुमारी की उस लड़के से शादी कर दी। शादी के बाद भी वह नियमानुसार समय से काम पर पहुंच गया। जब भोजन का समय हुआ तो वह शहर की तरफ़ देखने लगा। मालिक ने डांटकर कहा, "यह क्या कर रहे हो?" उसने उत्तर दिया, "कल मेरी राजकुमारी से शादी हो गई है। वह रोटी लेकर आ रही होगी, मैं उसी की बाट जोह रहा हूं।"

मालिक खूब हंसा, लेकिन थोड़ी देर बाद उसने राजकुमारी को सचमुच आते देखा तो वह शर्मिंदा हो गया।

वह लड़का मालिक के पासवाले घर में रहने लगा। एक रात की बात है कि मालिक ने अपने नौकरों से कहा, "जाकर उस लड़के का ख़ात्मा कर दो, मुझे उसके कारण बहुत नीचा देखना पड़ता है।"

नौकर जब उसे मारने पहुंचे तो लड़के ने सिर और पूंछ को जोड़कर नाग बना दिया। नाग ने नौकरों को डस लिया, फिर वह इस लड़के को भी डसने दौड़ा लेकिन उसने कहा, "अगर मुझे छोड़ दिया तो मैं तुम्हारी पूजा करूंगा।"

नाग बात मान गया।

और उसी दिन से नागपूजा होने लगी। जैसे नाग राज़ी हुए वैसे सब राज़ी हों।

●●●

देश-विदेश की सचित्र लोककथाएं

पड़ोसी देशों की लोककथाएं
पंजाब की लोककथाएं
हरियाणा की लोककथाएं (पुरस्कृत)
हिमाचल की लोककथाएं
राजस्थान की लोककथाएं
मध्यप्रदेश की लोककथाएं
उत्तर प्रदेश की लोककथाएं
जापान की लोककथाएं
अफ्रीका की लोककथाएं
गुजरात की लोककथाएं
बिहार की लोककथाएं
असम की लोककथाएं
बंगाल की लोककथाएं (पुरस्कृत)
केरल की लोककथाएं

प्रेमचन्द की सरल, सचित्र बाल कहानियां

बूढ़ी काकी
बड़े घर की बेटी
सुजान भगत
परीक्षा
शतरंज के खिलाड़ी
दो बैलों की कथा
मां की ममता
शिकारी राजकुमार
गुल्ली-डण्डा
रानी सारंधा
नमक का दरोग़ा
रामलीला
पंच परमेश्वर
मन्दिर
ईद का त्यौहार
सब से बड़ा तीर्थ
कुत्ते की कहानी
मेरी कहानी
रामकथा
जंगल की कहानियां

रवीन्द्रनाथ टैगोर की सरल बाल-कहानियां

भोला राजा
काबुलीवाला
पारसमणि
मास्टरजी
तोते की कहानी
राजा का न्याय

ISBN 81-7028-332-9
9 788170 283324

राजपाल